शब्द और अर्थ को चमत्कृत करनेवाले अलंकार तीन प्रकार के होते हैं: शब्दालंकार, अर्थालंकार और उभयालंकार।

शब्दालंकार - यह अलंकार अपना सौन्दर्य शब्द विशेष के चमत्कार के द्वारा दिखलाते हैं, शब्द विशेष के परिवर्तन से शब्दालंकार प्रभावित होते हैं। जैसे अनुप्रास, यमक, श्लेष, आदि।

अर्थालंकार - जो अलंकार काव्य में अर्थ के द्वारा चमत्कार उत्पन्न करते हैं। इसे अर्थालंकार कहते हैं। इस प्रकार के अलंकारों में शब्द विशेष का पर्याय भी कभी-कभी ग्राह्य होता है जो कि अर्थ में किसी प्रकार का आघात उपस्थित न करे। जैसे उपमा आदि

उभयालंकार - जो अलंकार शब्द और अर्थ दोनों पर आधारित रहकर दोनों को चमत्कारी करते हैं वहाँ उभयालंकार होता है। जैसे - 'कजरारी अंखियन में कजरारी न लखाय।'

प्रधान रूप से अलंकार के दो भेद माने जाते हैं - शब्दालंकार तथा अर्थालंकार।

शब्दालंकार - 1. अनुप्रास - वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास कहते हैं, अर्थात् जहाँ समान वर्णों की बार-बार आवृत्ति होती है वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण (क) तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।

(ख) - रघुपति राघव राजा राम।

प्रथम में त तथा द्वितीय में 'र' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

~ है जो प्रकार ...